

Emergence of sociology in India

भारत में समाजशास्त्र एक विज्ञान के रूप में परिचित  
 देशों में ही आया है। अन्य देशों की तरह, भारत में  
 भी कुछ ऐसे विचारक हुए हैं, जिनकी दृष्टि में  
 हम प्राचीन सामाजिक व्यवस्था की समझ मिलती है।  
 आर्य समाज के "अथर्वशास्त्र" मनु द्वारा रचित "मनुस्मृति"  
 आदि प्राचीन ग्रंथों में प्राचीन भारतीय समाज के बारे  
 में जानकारी मिलती है। लेकिन इन ग्रंथों का  
 स्वरूप कभी भी समाजशास्त्रीय नहीं था।  
 युरोप में, विचारक प्रोफ. रॉबर्ट डाल्टन ने  
 समाजशास्त्र का उदय औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न  
 सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के परिणाम  
 स्वरूप हुआ। लेकिन भारत में औद्योगिक क्रांति बहुत  
 देर से प्रारंभ हुई और समाजशास्त्र की उत्पत्ति यहाँ  
 भारत में समाजशास्त्र की उत्पत्ति में उपनिवेशवाद के  
 परिणाम स्वरूप होने वाले परिणामों का एवं आधुनिक विचार  
 का प्रसार-प्रचार का महत्वपूर्ण भूमिका रही है।  
 युरोपीय जालका एवं व्यापारियों ने अपने देशों के  
 मानवशास्त्रियों, प्रशासकों, इतिहासकारों एवं दूसरों को  
 प्रचारकों को भारतीय समाज में जाति व्यवस्था, जनजातों,  
 ग्रामीण समुदाय, संयुक्त परिवार, धर्म, सभ्यता एवं साहित्य  
 का अध्ययन करने के लिए काफी प्रोत्साहित किया।  
 लोगों ने भारतीय समाज और संस्कृति का अध्ययन  
 समझने का प्रयास किया ताकि वे भारत पर अपना  
 प्रभुत्व कायम रख सकें। इन प्रयासों में अंग्रेजों  
 एवं के एन्थ्रोपologists, पैदा हुए। इन विद्वानों ने  
 भारतीय समाज और संस्कृति का विचार किया।

15 मार्च को एक विद्वानों के सम्मेलन हुआ जिसमें 300 विद्वानों  
... नामों के बीच में किंचित प्रारंभिक परामर्श प्राप्त हुआ।

Francis Buchanan, Hamilton, Sir Henry Maine,  
George N. Grierson, Baden Powell, Charles  
Metcalfe, Max Mueller, Atkinson, Gibson,  
Marshall आदि थे। इन विद्वानों की रचनाओं ने  
वर्तमान भारतीय भाषाओं को भी अपने समग्र रूप में भारतीय  
के अध्ययन करने में मिलने प्रेरित किया। भारतीय विद्वानों  
जिनमें से एक नाम प्रकाश चंद्र बोस का है। भारतीय  
विद्वानों प्रणाली को अक्षरों एवं पाठशाला से विद्वानों  
तक विस्तार हुआ।

सम्राज्य शासन (1773) ने अपने एक लेख में  
1773 - 1900 तक के काल को भारतीय भाषाशास्त्र के  
सम्राज्य शासन का प्रारंभिक काल माना है।  
सम्राज्य शासन के विकास के इस प्रथम काल में  
को सही भाषा में सम्राज्य शासन का प्रारंभिक काल  
माना जाता है। इसकी अवधि में दो कारण हैं।  
1) जब सम्राज्य शासन एक विषय के रूप में 19वीं सदी के  
उत्तरार्द्ध में प्रारंभ में उत्पन्न किया तो भारत में इसके  
उदगम 18वीं सदी में राजशाही अवैज्ञानिक है।  
2) 19वीं सदी तक भारतीय समाज और संस्कृति का  
जितने भी काम किया गया है व सम्राज्य शासन के उदगम  
से विकसित ही है। सम्राज्य शासन का व समाज शास्त्र  
से सम्राज्य शासन साहित्य तथा Ethnology के उदगम  
सही व समाज शासन की स्थापना से समाज शास्त्र के उदगम  
सही के प्रारंभ में हुई जिनके समाज शास्त्र की स्थापना  
सम्राज्य शासन के विकास का द्वितीय काल उत्पन्न किया  
गया है। सही भाषा में द्वितीय काल उत्पन्न में समाज शास्त्र  
के विकास का प्रथम काल उत्पन्न है। इसका कारण है।

सामाजिक शास्त्र के क्षेत्र में मानवशास्त्रियों का काफी  
बोलबाला था।

उपरोक्त परनाल विद्वानों की कृतियों से भारतीय लोग प्रभावित हुए और एक नया बुद्धिजीवी वर्ग का उदय हुआ। उनमें से कुछ लोगों ने, मुख्य विषयों को उल्लेख करते हुए, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों में विशेष रुचि देना शुरू की। वे लोग प्रायः उच्च जाति और उच्च वर्ग के परिवार से जुड़े हुए थे। जो आर्थिक रूप से सुखी तथा सामाजिक दृष्टि से जागरूक थे। उन्हीं भारतीय मंडलियों तथा इन्हीं में जाकर उच्च शिक्षा आदि का तथा अपने देश से भारतीय समाजों को पर विचार प्राप्त कर दिया। प्रायः ही ही बुद्धिजीवी अंग्रेजी भाषण के समर्थक थे और अंग्रेजों की मदद से भारतीय समाज में सुधार तथा अंग्रेजी शिक्षा के उपाय प्रचार में काफी रुचि रखते थे। उदा. भारत के विद्वानों का मुख्यतः ही अंग्रेजों से संबंध था।

↓  
संस्कृतवादी

↓  
आधुनिकवादी